ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

एक झलक : राजपूत स्त्रियों का गौरवमयी आचरण

A Glance: Proud Behavior of Rajput Women

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

स्नेही श्रीवास्तव
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग,
मड़ियाहूँ पी. जी. कॉलेज,
मड़ियाहूँ, जौनपुर
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वीर प्रसूता राजपूतीय अस्मिता जहाँ एक गौरवमयी इतिहास अदम्यशौर्य का प्रमाण है, वही इसकी तरफ जीवंत परम्परा, समृद्धकला, क्षत्राणियों की गौरवगाथा उनके सम्मान, बलिदान, सांस्कृतिक तीज–त्योहार रंग–बिरंगी भेषभूषा ने राजपूतीय संस्कृति की छटा को दुनियाभर में एक अलग रंग बिखेरा है।

Veer Maternity Rajput Asmita While a glorious history is the proof of indomitable beauty, on the same side its vibrant tradition, rich art, glorification of Kshatriyans, their honor, sacrifice, cultural festivals and colorful colorful dress has spread the color of Rajput culture in a different color all over the world.

मुख्य शब्द : स्त्रियों का गौरवमयी आचरण, राजपूत आचरण, शूरवीरता, सम्मान, बलिदान, सांस्कृतिक ।
Pride of Women, Rajput Conduct, Valor, Honor, Sacrifice, Cultural.

प्रस्तावना

जैसा कि हम जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र या कुल के आचरण व्यवहार एवं सामाजिक स्थिती का परिदृश्य उसके इतिहास का एक अत्यधिक रूचिकर अंश माना जाता है। राजपूत क्षत्राणियों की दशा तथा उनके स्थान को समझने के लिए राजपूत आचरण तथा उनके प्रति किए गये कार्यों को जानना अत्यन्त आवश्यक है। राजपूतों के इतिहास में वर्णित है कि उन्होंने अपने जीवन के बारे में जो सिद्धान्त अपना लिए थे उनका पालन वे जीवन–पर्यन्त करते थे। युद्ध के उपरान्त तथा युद्ध समाप्ति के पश्चात् अपने शत्रुओं के साथ भी उन सभी सिद्धान्तों और व्यवहार को लागू करते थे और उन्हीं सिद्धान्तों में स्त्रियों का सम्मान उच्च था। राजस्थान में स्त्रियों को जो सम्मान दिया गया है, वैसा किसी दूसरे देश में नहीं दिया गया। राजपूतों में स्त्रियों का स्थान अत्यन्त उच्च रहा है। वे स्त्री को लक्ष्मी और देवी का रूप मानते थे। और राजपूतों का यह आत्मविश्वास था कि स्त्री के द्वारा ही पुरूष को सुख और शान्ति मिलती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. राजपूत स्त्रियों के आचरण का अध्ययन करना।
2. क्षत्राणियों का अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए उठाए गये शौर्यतापूर्वक कदम का इस सन्दर्भ में अध्ययन करना।
3. राजपूत स्त्रियों ने किस प्रकार अपनी वीरतापूर्वक छवि से प्रभावित किया इसका अध्ययन करना।
4. राजपूत संस्कृति का भारतीय इतिहास में स्त्रियों के द्वारा प्रचार–प्रसार के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

मानव जीवन में जिस प्रकार गृह का अपना एक महत्वपूर्ण और विशेष स्थान है और इस गृह की रचना स्त्रियों द्वारा ही होती है जिसे 'गृहणी' तथा गृहलक्ष्मी के रूप में सम्बोधित किया जाता है। हिन्दू धर्मग्रन्थों में वर्णित है कि वह घर, घर नहीं कहलाता है जिसमें स्त्री नहीं होती। संसार के सभी रत्नों में स्त्रियों को सर्वश्रेष्ठ रत्न माना जाता है। जीवन में स्त्री को प्रधानता दी गई है। स्त्री विरोधी व्यक्ति के जीवन में किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सफलता की प्राप्ति नहीं होती। राजपूत समाज इन सिद्धान्तों में विश्वास रखता है। और अपने जीवन में भी स्त्री को पर्याप्त सम्मान देता है। प्राचीन जर्मनी और स्कैण्डीनेविया के पुरूषों की भाँति ही राजपूत लोग भी अपने प्रत्येक कार्यों में स्त्रियों की सलाह लेते थे। राजपूतों में स्त्रियाँ अपने आत्म–सम्मान के लिए कई युद्धों में भाग लिया और उनका नेतृत्व किया। राजस्थान में साधारण एवं निम्न जाति की स्त्रियाँ घर के कामकाज के लिए बाहर के कुओं से पानी भर कर लाती थी और वहां जाकर

पुरूषों के साथ बातचीत भी करती थी। ऐसे अवसरों पर कभी–कभी अपने जीवनसाथी का चुनाव कर लेती थी। संसार के इतिहास में कही नहीं मिलेगा। पति के प्रति यह अनुराग उनके जीवन में कम नहीं होता। स्त्रियों की रक्षा में जहां राजपूत अपने प्राणों की बाजी लगाने को उद्यत रहते थे, वहीं राजपूत रमणी भी ऐसे अवसर पर अपने प्राण उत्सर्ग करने में पीछे नहीं हटती थी।

मनुस्मृति में स्त्री के सम्बन्ध में बहुत ही प्रशंसनीय बातें लिखी गई है। लिखा गया है कि 'स्त्री का मुख जितना सुन्दर होता है, उतना ही वह पवित्र भी होता है। स्त्री का जीवन गंगा के जल और सूर्य की किरणों के समान स्वंय पवित्र है। और दूसरे के जीवन को भी पवित्र करने वाला है। जिस स्त्री का घर में अनादर होता है उस घर का पूर्ण विनास होता है। स्त्रियों के सम्मान की बहुत सी बातें प्रसिद्ध प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित है जिसका प्रभाव राजपूतों के जीवन में प्रतीत होता है। प्रत्येक राजपूत अपने गृहस्थ जीवन को सर्वाधिक महत्व देता है। जिसका संचालन उसकी स्त्री के अधिकार क्षेत्र में है। जो स्त्री बुद्धिमत्तापूर्वक अपने घर का संचालन करती है, वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल मानी जाती है। स्त्रियों का सम्मान यदि सभ्यता का लक्षण है, तो राजपूत जाति सर्वश्रेष्ठ हैं।

राजपूत स्त्रियों का जीवन घरों के भीतर बहुत सीमित था फिर भी उनके जीवन में दासता जैसी कोई बात नहीं थी।

निष्कर्ष

राजपूत स्त्री पति की आज्ञाकारिणी होकर पति की प्रत्येक न्यायायुक्त आज्ञा का पालन करती है। दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने का यह सर्वश्रेष्ठ उपाय है। स्त्रियाँ अपने पति और ससुर कुल के प्रति अत्यन्त शिष्ट और सुशील सिद्ध हो, इस उद्देश्य के निमित्त राजपूत अपनी पुत्रियों का विवाह ऊँचे और सम्पन्न घरानों में करते थे। राजपूतों में पति और पत्नी के मध्य का व्यवहार पूर्णतः आर्दश का प्रतीक है। दाम्पत्य जीवन को सुन्दर और सुखमय बनाने के लिए पति का सम्मान और स्त्री का अनुराग आवश्यक है। और यह बात राजपूतों के जीवन में पूर्णतः देखी जा सकती है। पति और पत्नी का यह आर्दश किसी भी देश में और किसी भी समय में मानव समाज को सुखी और सन्तोषपूर्ण बना सकता है, ऐसा आर्दश राजपूत स्त्रियों में आज भी विद्यमान है और उतना अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलेगा। राजपूत स्त्रियाँ अपने सम्मान और गौरव की रक्षा के लिए प्रयत्नशील रही है। हिन्दू जाति के इतिहास का प्रत्येक पन्ना स्त्रियों के प्रभाव से भरा पड़ा है। सीता के उद्धार के लिए राम को रावण का वध करना पड़ा। द्रौपदी के अपमान का बदला लेने के लिए महाभारत का युद्ध लड़ा गया। स्त्री के खातिर राजा भृतर्हरि ने अपना राजसिंहासन तक त्याग दिया कन्नौज की संयोगिता के हरण से चौहानों और राठौड़ो में कलह उत्पन्न हो गयी और गोरी के विरूद्ध पृथ्वीराज को अकेले ही लड़ना पड़ा और अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। ऐसे हजारों उदाहरण है जो कि स्त्रियों के सम्मान के लिए अग्रसर हैं। फिर भी राजपूत के शौर्य और विक्रम के बारे में किसी को सन्देह नहीं हो सकता। जिसने भी यहाँ का सच्चा इतिहास देखा है, वह राजपूत स्त्रियों के श्रेष्ठ चरित्र की अवश्य प्रशंसा करेगा उनकी सुन्दरता और गुणों को कवि लोग आज भी गाते आ रहे हैं। वे शूरवीरों को अपना जीवनसाथी बनाती थी और अपने पुत्रों को बचपन से शूरवीरता का पाठ पढ़ाया करती थी जितनी प्रशंसा राजपूतों की करी जा सकती है उतनी ही प्रशंसनीय राजपूत स्त्रियाँ भी हैं। हालांकि राजपूत स्त्रियों का जीवन बलिदानों का जीवन था फिर भी राजपूत स्त्रियों ने अपनी एक शौर्य की अलग ही गाथा को प्रमाणित किया। अपने मान–सम्मान की रक्षा के लिए प्रचलित जौहर–प्रथा को अपनाना उचित समझा। जौहर प्रथा में एक ही समय में सैकड़ों स्त्रियाँ, लड़कियाँ अग्नि में प्रवेश कर अपने प्राण का उत्सर्ग कर देती थीं। क्योंकि स्वाभिमानी राजपूतों के लिए अपनी लड़कियों के लिए राक्षस विवाह मंजूर नहीं था इसलिए उन्होंने जौहर जैसी कठोर प्रथाओं का सहारा लिया। युद्ध का समय स्त्रियों के लिए अत्यन्त भयानक होता था। क्योंकि आक्रमणकारी लूटमार करता था और स्त्रियों को बन्दी बनाकर अपने यहाँ ले जाता था और सैनिकों सरदारों में बाँट देते थे जो कि अत्यन्त घृणित या इस प्रकार की घृणित घटनाओं से बचने के लिए राजपूत स्त्रियाँ अपने आत्मसम्मान को बचाना उचित समझा और जौहर जैसी प्रथाओं को अपनाया । उच्चकोटि का साहस, देशभक्ति, स्वामिभक्ति, स्वाभिमान, उदारता धार्मिकता और सादगी तथा शुद्ध आचरण इत्यादि गुण राजपूत स्त्रियों में विद्यमान थी। जो कि इतिहास में गौरवमयी और अदम्य शौर्य के लिए प्रमाणित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारत का वृहत्त इतिहास – श्री नेत्र पाण्डेय*
2. *भारत का इतिहास – डॉ0 ऐ0 के0 मित्तल*
3. *मध्यकालीन भारत – इम्त्याज अहमद*
4. *भारत भूमि का इतिहास – शिव नारायण सिंह राणा*
5. *मध्यकालीन भारत का वृहत्त इतिहास – जे0 एल0 मेहता (समाज एवं संस्कृति)*
6. *मध्यकालीन भारतीय संस्कृति – आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव*
7. *राजस्थान का इतिहास – कर्नल जेम्स राड*
8. *राजस्थान (इतिहास एवं संस्कृति) – डॉ0 हुकुम चन्द्र जैन*
9. *झालवाड़ राज्य का इतिहास – ललित शर्मा*
10. *मध्यकालीन भारतीय संस्कृति – डॉ0 लईक अहमद*